आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2490 • उदयपुर, बुधवार 20 अक्टूबर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

संस्थान द्वारा भटिंडा (पंजाब) में राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान ने अपने आश्रम व शाखाओं द्वारा कोरोना के प्रकोप के समय से ही जरूरतमंद परिवारों को राशन पहुंचाने का सेवा प्रारंभ की थी। समय की आवश्यकता को देखते हुए यह सेवा अनवरत जारी है।

14 सितम्बर 2021 को एक राशन वितरण शिविर भटिंडा (पंजाब) में संपन्न हुआ। इसमें 45 परिवारों को राशन प्रदान किया गया। शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान मोहनलाल जी वर्मा, अध्यक्ष श्रीमान अजीत सिंह जी, विशिष्ट अतिथि श्रीमान कमल जी एवं श्रीमान् नवज्योत सिंह जी आदि पधारे। शिविर में प्रभारी श्रीमान् मुकेश जी शर्मा ने व्यवथाऐं देखी। प्रत्येक परिवार को राशन किट में 15 किलो आटा, 2 किलो दाल, 5 किलो चावल, 2 किलो तेल, 4 किलो चीनी, 1 किलो नमक एवं मसाले प्रदान किए गए।

हमीरपुर में कृत्रिम अंग सेवा

नारायण सेवा संस्थान की देश–विदेश में स्थित शाखायें भी दिव्यांगजनों को राहत प्रदान करने व सेवा करने में तत्पर हैं। गत 17–18 जुलाई 2021 को ज्वालाजी, जिला– कांगड़ा, (हि.प्र.) की हमीरपुर शाखा द्वारा मातृ सदन, सरस्वती विद्यालय के पास कृत्रिम अंग वितरण शिविर लगाया गया।

इस शिविर में कुल 68 दिव्यांगजन आये, जिनमें से 28 को कृत्रिम अंग प्रदान किये तथा 40 को कैलिपर्स वितरित किये गये।

शिविर में गरिमामय उपस्थिति श्रीमान् प्रेमकुमार जी धूमल– पूर्व मुख्यमंत्री हि. प्र. (मुख्य अतिथि), श्रीमान् रमेश जी घवाला– पूर्व मंत्री वरमानीया विधायक (अध्यक्ष), श्रीमान् रविन्द्र रवि जी– पूर्व मंत्री महोदय (विशिष्ट अतिथि), श्रीमान् रसील सिंह जी मनकोटिया– शाखा संयोजक हमीरपुर, श्रीमान् संजय जी जोशी– पत्रकार, श्रीमान पंकज जी शर्मा एवं श्री रामस्वरूप जी शास्त्री– समाजसेवी पधारे। टेक्नीशियन टीम में श्री नरेश जी वैष्णव एवं श्री किशन जी लोहार ने सेवाएँ दी। शिविर टीम श्री अखिलेश जी अग्निहोत्री– प्रभारी, श्री रमेश जी मेनारिया, श्री मुन्ना सिंह जी आदि ने सहयोग किया।

गुड़गांव में दिव्यांग सहायता शिविर

नारायण सेवा संस्थान की गुड़गाँव शाखा के तत्वावधान में मित्सुबिशी इलेक्ट्रिक ऑटोमेटिव इंडिया प्रा. लि. के सहयोग से दिव्यांग जाँच, ऑपरेशन चयन, कृत्रिम अंग माप एवं सहायक उपकरण वितरण शिविर आयोजित हुआ।

उक्त शिविर में 20 दिव्यांगों को ट्राईसाइकिल, 10 को व्हीलचेयर, 10 जोड़ी बैसाखियाँ, 8 के कैलिपर्स का माप लिया गया, 2 के कृत्रिम अंगों का नाप लिया गया तथा 4 का ऑपरेशन के लिये चयन किया गया।

शिविर के मुख्य अतिथि श्री विशाल जी नागदा (प्रतिनिधि मित्सुबिशी इलेक्ट्रिक ऑटोमोटिव इंडिया प्रा. लिमिटेड), अध्यक्ष श्री रघुनाथ जी गोयल, (समाजसेवी) विशिष्ट अतिथि श्री रमेश जी सिंघला (कोषाध्यक्ष वैश्व समाज धर्मशाला) पधारे। डॉ. एस.एल. जी गुप्ता– (ऑर्थोपेडिक सर्जन) ने अपने साथी नाथूसिंह जी एवं किशन जी टेक्नीशियन के साथ सेवाएँ दी। शिविर टीम में आश्रम की ओर से अखिलेश जी (शिविर प्रभारी),श्री गणपत जी रावल (आश्रम प्रभारी), श्रीरमेश जी शर्मा एवं श्री मुकेश जी त्रिपाठी उपस्थित रहे।

खुर्जा (उत्तरप्रदेश) में कृत्रिम अंग वितरण शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा में लिए जानी जा रही है।

देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण, दिव्यांग सहायक उपकरण एवं दिव्यांग ऑपरेशन जारी है।

ऐसा ही कृत्रिम अंग वितरण शिविर 12 अगस्त 2021 को नारायण सेवा संस्थान के खुर्जा, जिला– बुलंदशहर, उत्तरप्रदेश आश्रम में संपन्न हुआ।

इस शिविर में 19 दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग तथा 07 के लिये कैलिपर्स की सराहनीय सेवा हुई। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री हरपाल सिंह जी (पूर्व विधायक खुर्जा), अध्यक्ष श्री सत्यवीर शास्त्री जी (पूर्व प्रधान महोदय, खुर्जा), विशिष्ट अतिथि श्रीमान जयप्रकाश जी चौहान, श्रीमान राजप्रताप सिंह जी (समाज सेवी), श्रीमान योगेन्द्र प्रताप जी राघव (सेवा प्रेरक एवं संयोजक) कृपा करके पधारे और संस्थान की सेवा प्रकल्पों की सराहना की।

टेक्नीशियन टीम में श्री नाथूसिंह जी, शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री भरत जी भट्ट का पूर्ण योगदान रहा।

अंतहीन संभावनाएं – दिव्यांगता मिटाने के लिये विभिन्न आयाम
WORLD OF HUMANITY का निर्माण प्रगति पर.....

अंतहीन संभावनाएं - दिव्यांगता मिटाने के विभिन्न आयाम

चिकित्सा
- निदान (एक्स रे, ओपीडी, लैब)
- उपचार (कृत्रिम अंग और कैलीपर्स)
- पोस्ट ऑपरेटिव केयर (वार्ड, आईसीयू)
- चिकित्सा सहायता (फार्मेसी एवं फिजियोथेरेपी)

स्वावलम्बन
- हस्तकला या शिल्पकला
- सिलाई प्रशिक्षण
- डिजिटल (कंप्यूटर) प्रशिक्षण
- मोबाइल फोन मरम्मत प्रशिक्षण
- नारायण चिल्ड्रन एकेडमी (निःशुल्क डिजीटल स्कूल)

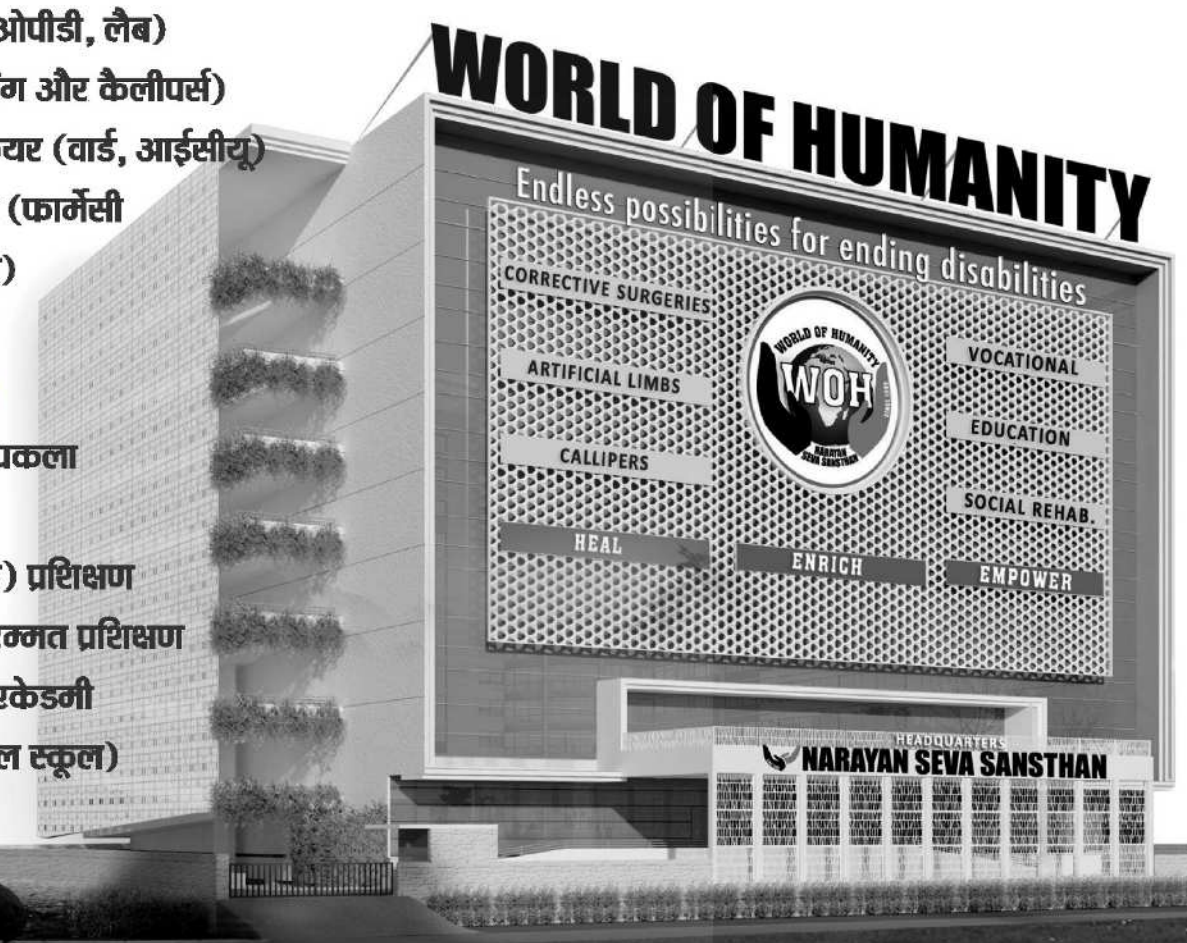

सशक्तिकरण
- दिव्यांग शादी समारोह
- दिव्यांग हीरोज
- दिव्यांग खेल अकादमी
- दिव्यांग संगोष्ठी - सेमीनार
- इंटर्नशिप वॉलंटियर

सामुदायिक सेवाएं
- आदिवासी और ग्रामीण शिक्षा
- वस्त्र वितरण
- दृश्य एवं श्रवण बाधित के लिए आवासीय विद्यालय
- भोजन सेवा
- राशन वितरण
- वस्त्र और कंबल वितरण
- दवा वितरण

○ 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल ○ 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त
○ निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी ○ निःशुल्क कृत्रिम अंग निर्माण कार्यशाला
○ प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों का निःशुल्क आवासीय
○ व्यावसायिक प्रशिक्षण ○ बस स्टेण्ड से मात्र 700 मीटर दूर ○ रेल्वे स्टेशन से 1500 मीटर दूर

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

कैलाश जी मानव की अपील
मानवता का संसार में एक ईंट आपकी ओर से भी लगे श्रीमान्

पिछले 34 वर्षों में आपके अपने संस्थान में 4 लाख 25 हजार से अधिक निःशक्त रोगियों का सफल ऑपरेशन कर उन्हें शारीरिक, आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सुदृढ़ बनाया है, लेकिन अब भी दिव्यांगता से ग्रस्त रोगी बड़ी सँख्या में आ रहे हैं। जिसकी वजह से प्रतीक्षारत रोगियों की सँख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। संसाधनों और स्थान की वृद्धि करने तथा प्रतीक्षारत रोगियों को लाभान्वित करने के उद्देश्य से वर्ल्ड ऑफ ह्यूमेनिटी (मानवता का संसार) नामक अति आधुनिक हॉस्पिटल का निर्माण किया जा रहा है। 2 लाख 44 हजार वर्गफीट में बनने वाली 7 मंजिला इस इमारत में 450 बेड़, ऑपरेशन थियेटर, आईसीयु, अत्याधुनिक लेबोरेट्री, डिजिटल एक्स–रे एवं भारत की प्रथम विश्वस्तरीय कृत्रिम अंग निर्माण कार्यशाला संचालित होगी। साथ ही इस भवन में शारीरिक व मानसिक अक्षमता के रोगी भाई– बहनों को रोजगारोन्मुखी बनाने के लिए 20 व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र, सेरेब्रल पाल्सी से ग्रसित बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए विशाल सीपी पार्क, 1 हजार से अधिक निःशक्त रोगी एवं परिचारकों के आवास एवं भोजन की अति उत्तम सुविधा, विशाल प्रार्थना हॉल, दिव्यांगों के हुनर को सम्पूर्ण विश्व में प्रसारित करने के उद्देश्य से ऑडिटोरियम का निर्माण किया जाएगा । इस ग्रीन बिल्डिंग में पर्यावरण के मानकों को ध्यान में रखते हुये जल संरक्षण हेतु वाटर हार्वेस्टिंग, वाटर ट्रीटमेंट प्लान्ट, सीवरेज ट्रीटमेंट प्लान्ट, सौर ऊर्जा संयंत्र आदि स्थापित होंगे।

दया एवं करुणा से ओत– प्रोत सहृदयी आप सभी दानवीरों से प्रार्थना है कि इस पावन पुनीत यज्ञ में अपनी आहुति अवश्य दें। सेवा के इस मन्दिर को बनाने में एक– एक ईंट आपकी ओर से भी लगे, ऐसी विनम्र प्रार्थना है। कृपया इस शुभ निर्माण कार्य में साथ जुड़ें।

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

मैं जब कुछ दिवस पूर्व मुम्बई आर्थिक महानगर में गोरेगाँव गया था। वो आश्रम कई वर्ष पहले लिया बांगुर नगर में। धन्यवाद है हमारे माहेश्वरी साहब को जिन्होंने किराये पर आश्रम दिया वर्षों हो गये। ये किसी के काम जो आये जो उसे इंसान कहते हैं। ये परिभाषा है आप काम आये? आपने पानी पिलाया क्या प्यासे को, आपने भूखे को भण्डारा करवाया क्या, आपने कटे हुए पैर वालों को कृत्रिम अंग लगवाये क्या, आपने टेढ़े पैर वाले का पैर सीधा करवाया क्या ? यदि उत्तर हाँ में मिले समझना आप धन्य हो गये।

सारे भजन, सारे गीत, रात्रि जागरण की सारी कथाएँ सब सफल हो गये। यदि किसी के काम आये तो इसमें रामचरित मानस प्रमाण है, क्योंकि कपास के जैसा संत का चरित्र बताया है साधु– चरित्र शुभ चरित कपासु। अरे महाराज, आप तो मोटी मोटी बातें करो। हाँ मोटी बात ये हैं कि गोरेगाँव में जब शिविर लगा।

जो 5–5 साल के बच्चे के माता के कोख से, माता के गर्भ से ही अणरो विकास नहीं होय पायो। 80 कारण है महाराज कौन –कौन से कारण हैं ? कितना कष्ट दिया हमने अशिक्षा की वजह से नारी को दासी मानकर के कितना बड़ा पाप किया। हमने अहल्या को हमने पत्थर बना दिया। गौतम नारी शापवश, क्या शाप था ? अपमान कर दिया बिना वजह से बेइज्जती कर दी, बिना वजह से उनको व्यंग्य कर दिया, बिना वजह से उनकी मजाकें उड़ा दी और वो जड़वत् बन गई, पत्थर जैसी हो गई। कहत हैं आँखे पत्थरा गई और भगवान श्रीराम ने ना बेटा ना अहल्या आप जागो, आपकी आत्मा शक्ति जगे। आपके मन का बोध जगे, आपके मन का उत्साह जगे जो उत्साह कहीं खो गया है आज वो जगे और अहिल्या जग गई।

सम्पादकीय

युग न जाने क्यों और कैसे खुशियों के आगोश से फिसलकर गम की गोद में जा पड़ा है। हर व्यक्ति आज अविश्वास में जी रहा है। विश्वासों की दीवारों में दरारें आने लगी है। इसका प्रमुख कारण दिखाई देता है कि आज हर व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति से आशंकित है। पहले सामान्यतः देखा जाता था कि रेल, बस में सहयात्री से घुलना– मिलना आम बात थी। आज तो हर सहयात्री से चोर, उचक्का मानकर व्यवहार आम बात है। पहले पड़ोसियों का विश्वास तो परिवार की तरह था, आज हर पड़ोसी एक दूसरे को संदिग्ध मान रहा है। यहाँ तक कि परिवारजनों में भी अब तो विश्वास डगमगाने के उदाहरण दिखने लगे हैं। सच तो यही है कि मानव–मन में संदेह और शंकाओं ने डेरे डाल दिये हैं। इससे सम्बन्धों की मधुरता की मधुर धुन तो कहीं खो गई, इसके स्थान पर कटुता की कर्कशता छाने लगी है। इसके लिए हम आपसी विश्वास पर कुछ छोटी–छोटी पहल करें, तभी वातावरण में बदलाव संभव है। मनुष्य विश्वास के लिए बना है, न कि अविश्वास के लिए। इस मंत्र को साकार करने की पहल हरेक को करनी होगी।

कुछ काव्यमय

शंकाएं चहुँ ओर हैं,
टूट रहे विश्वास।
दिन दिन खुशियां घट रहीं,
हावी है संत्रास।।
विश्वासों का दरकना,
मानवता पर चोट।
इसके कारण बढ़ रही,
सम्बन्धों में खोट।।
शक की सूई घूमती,
बिना थके दिन रात।
इससे ही तो हो रहा,
विश्वासों का घात।।
सन्देहों की ही हवा,
फैल रही सब ओर।
कैसे इसका अन्त हो,
मिलता ओर न छोर।।
दृढ़ता से विश्वास को,
फिर बोना है आज।
शंकाओं पर गिर सके,
भारी गहरी गाज।।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

सकारात्मक सोच

एक बहुत ही प्यारा शब्द है अगर हम उस शब्द की सार्थकता को अपनी जिन्दगी में उतार लें तो यकीन मानिए जिन्दगी बहुत आसान हो जाएगी.....

जी हाँ 'सकारात्मक सोच' जीवन हमारा विचारों से ही बना है, हम जिस तथ्य को जिस विचार से देखेंगे आप पाएंगे कि आपके विचार ही आपको सुखी या दुःखी कर रहे हैं.....

स्वयं को पूर्णतया सकारात्मकता की तरफ देखना चमत्कार की तरह नहीं हो सकता, इसके लिए अभ्यास की जरूरत रहेगी.....एक पल से शुरू कीजिए, एक घंटे तक ले जाइए एक दिन पूरा....सभी कुछ सकारात्मक सोचिए, अपनी आदत में डालिए.....देखिए जीवन इतना प्यारा इतना आसान पहले कभी नहीं था.....

पोलियो हॉस्पिटल का जब भी एक चक्कर लगाता हूँ मरीजों के पैरों में लोहे की छड़े डाली हुई हैं, निश्चित रूप से इस वैज्ञानिक युग में भी उन लोहे की

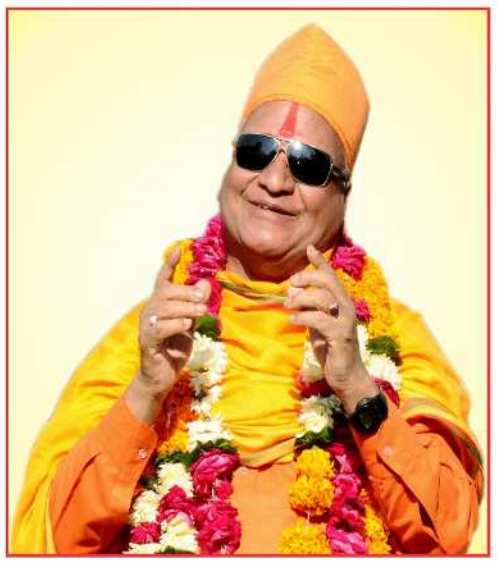

छड़ों ने अपना अहसास एक इन्सानी बदन में जरूर दर्द के रूप में दिलाया होगा परन्तु देखता हूँ, एक मरीज अपनी माँ से बहुत हँस कर बात कर रहा है, कभी–कभार ठहाकों की आवाज भी सुनाई देती हैं.....

मैंने उस मरीज से पूछा बेटा दर्द नहीं होता क्या .....तो जवाब में फिर उसी मुस्कराहट के साथ बोलता है, बाऊजी परन्तु अपने पैरों पर चलने की बात सोचता हूँ तो दर्द स्वतः ही कम महसूस होने लगता है..... उस गरीब अशिक्षित दिव्यांग मरीज की सोच कभी हम शिक्षितों को भी बौना कर देती है, जो छोटी सी परेशानी से निराश हो जाते हैं...

.....

निवेदन है आपसे, जब भी आप खुद को तनाव में पायें या लगे कि हो रही है मुश्किल आगे बढ़ने में या हो ईश्वर से शिकायतें या लगे हे भगवान ! ये इतना बुरा मेरे साथ ही क्यों होता है.....

तो आइए "नारायण सेवा संस्थान" के पोलियो हॉस्पिटल में, मिलिये पोलियो पीड़ित दिव्यांगों से, उन मासूम बच्चों से जिन्हें सिर्फ हँसना या सिर्फ रोना आता है....

आपको तनाव से राहत मिलेगी व मिलेगी मुश्किलों में भी आगे बढ़ने की प्रेरणा..... ईश्वर से भी कोई शिकायत नहीं रहेगी.....

खुद को दुनिया का सबसे खुशकिस्मत इंसान सिर्फ आप ही बना सकते हैं.....अपनी सोच को सकारात्मक बनाकर .....

–कैलाश 'मानव'

स्वकल्याण नहीं परकल्याण के लिए जीयें

आत्मसंयमी और संघर्षशील व्यक्ति वह होता है, जो हर कार्य करने के लिए सदैव तत्पर रहता है। वह जीवन में आने वाले खतरों से कभी नहीं डरता है। अवसर कितने भी प्रतिकूल क्यों न हों, परिस्थितियाँ कितनी भी खतरनाक क्यों न हों, वह आत्म–संयम से मुसीबतों का सामना करते हुए विजयश्री प्राप्त कर ही लेता है।

नेपोलियन बोनापार्ट, जिन्होंने अनेक लड़ाईयाँ लड़ीं और जीतीं। अत्यंत निर्भीक, साहसी और संघर्षशील व्यक्तित्व के धनी थे। एक बार वे अपनी विशाल सेना लेकर निकल पड़े एल्पस पर्वत श्रृँखला को पार करने। वे जब अपनी सेना को आगे

बढ़ने का आदेश देते हुए उसका नेतृत्व कर रहे थे तो राह में उन्हें एक बूढ़ी औरत मिली उस बूढ़ी औरत ने नेपोलियन से पूछा –कहाँ जा रहे हो बेटा?

इस प्रश्न पर नेपोलियन ने बहादुरी से सीना चौड़ा करते हुए उत्तर दिया – इस एल्पस पर्वत को पार करने। नेपोलियन का उत्तर सुनकर बूढ़ी औरत मन ही मन हँसने लगी और बोली –इस विशाल एल्पस पर्वत को पार करने जा रहे हो, जिसे आज तक कोई पार नहीं कर पाया और जिस–जिस ने इसे पार करने की कोशिश की वे मारे गए।

कोई भी नहीं बच पाया। इस पर्वत को पार कर पाना मुश्किल ही नहीं, असंभव है। अपने इरादे को त्याग दो और अगर अपनी और अपने सैनिकों की जान की सलामती चाहते हो तो यहीं से लौट जाओ।

नेपोलियन ने उस बूढ़ी औरत की बात को सुनकर ठहाके लगाते हुए अपने गले से एक माला निकाली और बूढ़ी औरत को वह माला देते हुए कहा–हे माँ! तुम्हारा धन्यवाद, तुमने मुझे निराश नहीं किया है, अपितु तुमने तो मुझे और अधिक प्रेरित कर दिया है एवं मेरे मन में एक नई ऊर्जा का संचार कर दिया है।

मैं अवश्य ही इस पर्वत को पार करके तुम्हारे पास वापस आऊँगा और उस समय तुम भी अन्य लोगों के साथ मेरी जय–जयकार कर रही होगी। नेपोलियन की विशाल पर्वत पार कर लेने की बात पर बूढ़ी औरत ने प्रत्युत्तर में कहा –मैंने जिसे भी इस पर्वत के बारे में बताते हुए उसे लौट जाने को कहा, वे सभी मेरी बात सुनकर वापस लौट गए।

किसी ने भी पर्वत पर चढ़ाई करने की कोशिश नहीं की। तुम अकेले ऐसे व्यक्ति हो, जिसने इतने अदम्य साहस का परिचय दिया है। तुम्हें यह पर्वत तो क्या, दुनिया का कोई भी पर्वत नहीं रोक पाएगा। तुम अवश्य ही जीतोगे, क्योंकि तुम्हारे इरादे चट्टान की तरह मजबूत हैं।

जो जीवन में करो या मरो का सिद्धान्त अपनाते हैं और खतरों से खेलने की इच्छा रखते हैं, वे कभी असफल नहीं होते।

जो अपने जीवन में विकल्पों का त्याग कर देते हैं और एकमात्र लक्ष्य की तरफ ही ध्यान लगाते हैं, जीत उनकी मुट्ठी में होती है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

ट्रस्ट की मीटिंग हुई, सभी एजेन्डों पर बातचीत हो गई तो अन्य विषयों पर चर्चा शुरू हुई। एक ट्रस्टी ने इसी के तहत नारायण सेवा को आवंटित जमीन की राशि आधी करने का प्रस्ताव रख दिया। इस प्रस्ताव के आते ही उस अधिकारी ने भी एक प्रस्ताव रख दिया। जिसके तहत व्यापार मण्डल को आवंटित जमीन की राशि भी आधी करने की माँग थी। यह नारायण सेवा के प्रस्ताव में अडंगा लगाने का प्रयास था, इस अधिकारी को न जाने क्या कष्ट था कि वह पहले दिन से जमीन आवंटन में रुकावट पैदा करने की कोशिश कर रहा था।

अधिकारी के प्रस्ताव का कई ट्रस्टियों ने विरोध किया। नारायण सेवा एक स्वयंसेवी संगठन जो जनहित में कार्यरत था, जबकि व्यापार मंडल विशुद्ध रूप से व्यापारियों का संगठन है, नारायण सेवा के प्रस्ताव के साथ इसे जोड़ना उचित नहीं। काफी देर चर्चा चली, तर्क–वितर्क हुए, मगर अन्ततः नारायण सेवा को आधे मूल्य पर जमीन देना तय हो गया।

कैलाश ने जब यह सुना उसे एक और सबक मिला कि परिणाम जो भी निकले, प्रयत्न करने में कभी कोई कसर बाकी नहीं रखनी चाहिये। अब जमीन के लिये 43 हजार रु. एकत्र करना था। यह भी कोई छोटी राशि नहीं थी, मगर कैलाश को विश्वास था कि रुपये एकत्र हो जायेंगे। उसे पी.जी.जैन के बाहर से चन्दा करवाने के प्रस्ताव का भी स्मरण था, मगर इसके लिये फिलहाल वह बाहर जाने को तैयार नहीं था।

कैलाश ने अपने सहयोगियों, मित्रों, व्यवहारियों से अनुरोध किया कि वे एक–एक, दो–दो हजार रु. बिना ब्याज के दे सकें तो साल भर में उन्हें वापस लौटा देंगे। प्रो. के.एस. हिरण उसके निकटस्थ सहयोगी थे, उन्होंने अपनी पत्नी के नाम पर 2 हजार रु. सहायता के रूप में दिये। कृषि महाविद्यालय के डॉ. आर.सी.मेहता ने भी मदद की। कई लोगों ने हजार–हजार, दो–दो हजार ब्याज पर भी उधार दिये। महीने भर में ही 43 हजार रु. एकत्र हो गये।

अंश - 135

रसोई के मसाले दवा भी हैं

हमारी रसोई में ऐसी कई चीजें है जो शरीर के लिए फंक्शनल फूड की तरह काम करती हैं। यदि घर में कोई दवा न हो तो इन्हें साबुत निगलने के अलावा इनसे तैयार पानी भी पेट, त्वचा और जोड़ों आदि संबंधि समस्याओं में फायदा पहुँचा सकता है।

जीरा

त्वचा से जुड़े संक्रमण और एलर्जी की समस्या में जीरा बेहद उपयोगी है।

प्रयोग : एक चम्मच जीरे को एक गिलास पानी में रातभर भिगोएँ। सुबह छानकर व सेंधा नमक मिलाकर पीने से पेट फूलने व पथरी के दर्द में आराम मिलता है।

दालचीनी

इसकी बेहद कम मात्रा प्रयोग में लेनी चाहिए। हृदय रोगियों के अलावा ब्लड शुगर कंट्रोल करने में फायदेमंद है।

प्रयोग : चुटकीभर दालचीनी के पाउडर को पानी या दूध में उबालें फिर गुनगुना पीएं। ध्यान रखें इसे सुबह खाली पेट ही लें।

दानामेथी

शरीर में कैल्शियम तत्व के अवशोषण को बढ़ाकर यह जोड़ों के दर्द और वजन घटाने में उपयोगी है।

प्रयोग : इक चम्मच दानामेथी को एक कटोरी पानी में रातभर भिगोएं, सुबह इसे छानकर पीएं। मेथी सहित उबला पानी भी पी सकते हैं।

सौंफ

विशेषकर बच्चों के लिए सौंफ का पानी उपयोगी है। आँतों व पाचनतंत्र को सही रखता है।

प्रयोग : एक चम्मच सौंफ को रातभर एक गिलास पानी में भिगोएं। सुबह 8–10 किशमिश के साथ इसे उबालें और छानने के बाद थोड़ा काला नमक मिलाएं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

आदरणीय पी.जी. जैन साहब बहुत गद्‌गद् हुए। उन्होंने देखा, 14 करीबन डॉक्टर साहब, कितने व्यवहारिक? कितने घुलमिल के बात कर रहे हैं? है तो इन्सान ही। परम् पूज्य पुष्कर मुनीजी महाराज साहब वरिष्ठ प्रवर्तक और बाद में जो आचार्य सम्राट बने देवेन्द्रमुनीजी महाराज साहब, उनके गुरूदेव और जैसे एक रंगमंच पर बहुत बड़े सेवा का एक प्ले हो रहा है। एकसेवा का रंगमंच जिसमें केवल नाटक नहीं, केवलडायलोग नहीं, भजन नहीं, कोई गाना नहीं। घुटने केबल चल के आने वाला, घुटने–घुटने चलने वाला बच्चा खड़ा हो के चलता है। मूक–बधिर बच्चा, संकेतों से बात करके परम प्रसन्न होता है। ऐसे मूक–बधिर बच्चे नारायण सेवा संस्थन में पच्चीस से अधिक भगवान ने भेज दिये। पच्चीस से अधिक प्रज्ञाचक्षु बच्चे। करीबन सत्तर बच्चे मेन्टली रिटायर्ड है। उम्र पन्द्रह साल की है लेकिन बुद्धि सात साल की है। किसी की उम्र बारह साल की है, बुद्धि चार साल की है। हाँ, हमारी बुद्धि कितने साल की है? कभी सोचा क्या? सब कुछ होते हुए, बहुत कुछ होते हुए भी देना नहीं चाहते। हाँ, भड़भुजाघटी, बर्तन बाजार करोड़पति, अरबपति। एक एल्युमीनियम की कटोरी, एक एल्युमीनियम की। कटोरी, दीन दुःखी भइयों को दाल देने के लिये, भरने के लिये तैयार नहीं और ठोकर चौराहा उदयपुर का एक भाई साहब, सब्जी बेचने वाला, थेले पे सब्जी बेचनेवाला, सब्जी लाता है निःशुल्क आलू, टमाटर लीजिये। ये ही इस दुनिया में होता आया है, हमें तो भगवान ने बहुत दिखाया।पी.जी.जैन साहब सीधे पीएनटी कॉलोनी पधारे। बहुत गद्‌गद् बाईस पीएनटी कॉलोनी फर्स्ट लोर पर, पहले चाय पी। उनकी आँखें में आँसू आ गये। मैंने कहा–बाऊजी आप रोते क्यों हो? ऐसा क्या हो गया कि आप रोने लग गये? गद्‌गद् कंठ से, भरे हुए कंठ से,पारसमल जी गुलाब चन्दजी जैन साहब, सोजत रोड़ गोरेगाँव, रायगढ़ जिले वाले।उन्होंने कहा– बाबूजी मैं अठाईस साल से इस तरह की संस्था को ढूंढ रहा था। खूब घूमा हूँ मैं, खूब दौड़ा हूँमैं, खूब संस्थओं में गया हूँ, पर जो आज मैंने दृश्यदेख। जो मैंने नारायण सेवा देखी, जो मैंने अद्‌भूत सेवाकार्य देखे।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 265 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023